समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



कक्षा - 9

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 6

चिकित्सा का चक्कर

बेढब बनारसी

भाग – 3

कीर्ति बसुमतारी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

आप धोती पहने हुए थे और कंधे पर एक सफेद दुपट्टी डाले हुए थे। इसके अतिरिक्त शरीर पर सूत के नाम पर जनेऊ था, जिसका रंग देखकर यह शंका होती थी कि कविराज जी कुश्ती लड़कर आ रहे हैं। वैद्यजी ने कुछ न पूछा। पहले नाड़ी हाथ में ली। पाँच मिनट तक एक हाथ की नाड़ी देखी, फिर दूसरे हाथ की। बोले, "वायु का प्रकोप है, यकृत से वायु घूमकर पित्ताशय में प्रवेश कर आंत में जा पहुँची है। इससे मंदाग्नि का प्रादुर्भाव होता है

मंदाग्नि – पाचन शक्ति कम होना

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

और किसी कारण जब भोज्य पदार्थ प्रतिहत होता है, तब शूल का कारण होता है।"

कविराज जी मालूम नहीं क्या बक रहे थे और मेरी तबीयत दर्द और क्रोध के एक दूसरे ही संसार में छटपटा रही थी। आखिर मुझसे न रहा गया। मैंने एक सज्जन से कहा, जरा आलमारी में से 'आप्टे' का कोश तो लेते आइए। यह सुनकर लोग चकराए। कुछ लोगों को संदेह हुआ कि अब मैं होश में नहीं हूँ। मैंने कहा दवा तो पीछे होगी, मैं पहले समझ तो लूँ कि मुझे रोग क्या है।

शूल- विष

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

तत्पश्चात वैद्यजी, 'चरक', 'सुश्रुत' के श्लोक सुनाने लगे। और अंत में कहा, देखिए, मैं दवा देता हूँ और अभी आपको लाभ होगा। पंडितजी ने दवा दी। कहा कि अदरख के रस में इस औषधि का सेवन करना होगा। खैर साहब, फीस दी गई। किसी प्रकार वैद्यजी से पिण्ड छूटा। दो दिन दवा की गई। कभी-कभी तो कम अवश्य हो जाता था, पर पूरा दर्द न गया। सी.आई.डी. के समान पीछा छोड़ता ही न था।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

चारपाई पर पड़ा रहने लगा। दिन को मित्रों की मंडली आती थी। वह आराम देती थी कम, दिमाग चाटती थी अधिक। एक सज्जन मुझे देखने के लिए तशरीफ लाए थे। बोले, "साहब, आप लोगों को देश का हर समय ध्यान रखना चाहिए। आप किसी भारतीय हकीम अथवा वैद्य को दिखलाइए।" मैंने मन में सोचा कि वैद्य महाराज को तो मैंने दिखा ही लिया, हकीम भी सही।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

हकीम साहब आए। यद्यपि मैं अपनी बीमारी का जिक्र और अपनी बेबसी का हाल लिखना चाहता हूँ, पर हकीम साहब की पोशाक और उनके रहन-सहन तथा फैशन का जिक्र न करना मुझसे न हो सकेगा। सर्दी बहुत तेज नहीं थी। बनारस में बहुत तेज सर्दी नहीं पड़ती। फिर भी ऊनी कपड़ा पहनने का समय आ गया था। परन्तु हकीम साहब चिकन का बंददार कुरता पहने हुए थे। सिर पर बनारसी लोटे की तरह टोपी रखी हुई थी।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

पाँव में पाजामा ऐसा मालूम होता था कि चूड़ीदार पाजामा बनने वाला था, परन्तु दर्जी ईमानदार था, उसने कपड़ा चुराया नहीं, सबका सब लगा दिया अथवा यह भी हो सकता है कि ढीली मोहरी के लिए कपड़ा दिया गया हो, दर्जी ने कुछ कतर-व्योंत की हो और चुस्ती दिखाई हो। जूता कामदार दिल्ली वाला था। हकीम साहब पतले-दुबले इतने थे कि मालूम पड़ता था, अपनी तंदुरुस्ती अपने मरीजों को बाँट दी है। हकीम साहब में नजाकत भी बला की थी। रहते थे बनारस में, मगर कान काटते थे लखनऊ के।

कामदार– এমব্রয়ডারি কৰা নजाकत – কোমলতা

आते ही मैंने सलाम किया, जिसका उत्तर उन्होंने मुस्कुराते हुए बड़े अंदाज से दिया और बोले, "मिजाज कैसा है?"

मैंने कहा, "मर रहा हूँ। बस, आपका ही इंतजार था। अब यह जिन्दगी आपके ही हाथों में है।"

हकीम साहब ने कहा, "यार! आप तो ऐसी बात करते हैं, गोया जिंदगी से बेजार हो गए हैं। भला ऐसी गुफ्तगू भी कोई करता है। मरे आपके दुश्मन, नब्ज तो दिखाइए। खुदाबंदकरीम ने चाहा तो आनन-फानन में दर्द रफूचक्कर होगा।"

नब्ज– नाड़ी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मैंने कहा, "अब आपकी दुआ है। आपका नाम बनारस ही नहीं, हिंदुस्तान में लुकमान की तरह मशहूर है, इसीलिए आपको तकलीफ दी गई है।"

दस मिनट तक हकीम ने नब्ज देखी। फिर बोले, "मैं नुस्खा लिखे देता हूँ। इसे इस वक्त आप पीजिए, इंशा अल्लाह जरूर शिफा होगी।"

हकीम साहब चलने को तैयार हुए। उठे। उठते-उठते बोले, "जरा एक बात का ख्याल रखिएगा कि आजकल दवाइयाँ लोग बहुत पुरानी रखते हैं।

शिफा– ভাল হোৱা লুকমান – এজন বিখ্যাত হাকিম

मेरे यहाँ ताजी दवाइयाँ मिलती हैं।" दर्द फिर कम हो चला। परन्तु दुर्बलता बढ़ चली थी। कभी-कभी दर्द का दौरा भी अधिक वेग से हो जाता था। घरवालों को और मुझे भी दर्द के संबंध में विशेष चिंता होने लगी। कोई कहता था कि लखनऊ जाओ, कोई एक्स-रे का नाम लेता था। किसी-किसी ने राय दी कि जल-चिकित्सा कीजिए। एक सज्जन ने कहा, यह सब कुछ नहीं, आप होमियोपैथी इलाज शुरू कीजिए।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

देखिए, कितनी शीघ्रता से लाभ होता है। बोले, "साहब, इन नन्हीं-नन्हीं गोलियों में मालूम नहीं कहाँ का जादू है। साहब, जादू का काम करती हैं, जादू का।"

एक प्रकृति-चिकित्सा वाले ने कहा था कि आप गीली मिट्टी पेट पर लेपकर धूप में बैठिए। एक हफ्ते में दर्द हवा हो जाएगा। हमारे ससुर साहब एक डाक्टर को लेकर आए। उन्होंने कहा, "देखिए साहब, आप पढ़े-लिखे आदमी हैं। समझदार हैं।" मैं बीच में बोल उठा, "समझदार न होता तो आपको कैसे यहाँ बुलाता।"

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



इसी बीच मेरी नानी की मौसी मुझे देखते आई। उन्होंने बड़े प्रेम से देखा। देखकर बोली, "मैं तो पहले ही सोच रही थी कि यह कुछ ऊपरी खेल है।" मैंने पूछा, "यह ऊपरी खेल क्या है नानी जी?" बोलीं, "बेटा, सब कुछ किताब में ही थोड़े लिखा रहता है। बात यह है कि किसी चुड़ैल का फसाद है।" मेरी स्त्री और माता की ओर देख कहने लगीं, "देखो न इसकी बरौनी कैसी खड़ी है।

कोई चुड़ैल लगी है। किसी को दिखा देना चाहिए।" मैंने कहा, "डाक्टर तो मेरी जान के पीछे लग गए हैं। क्या चुड़ैल उनसे भी बढ़कर है?" जब सब लोग चले गए तब मेरी पत्नी ने कहा, "तुम लोगों की बात क्यों नहीं मान लिया करते ? कुछ हो या न हो, इसमें तुम्हारा हर्ज ही क्या है?" मेरे दर्द में किसी विशेष प्रकार की कमी न हुई। ओझा से तो किसी प्रकार की आशा क्या करता? पर बीच-बीच दवा भी होती जाती थी।

ओझा– ओझा

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कुछ लाभ अवश्य हुआ, पर पूरा फायदा न हुआ। मैंने अब पक्का इरादा कर लिया कि लखनऊ जाऊँ। जो बात काशी में नहीं हो सकती, लखनऊ में हो सकती है। वहाँ सभी साधन हैं।

सब तैयारी हो चुकी थी कि इतने में एक और डाक्टर को एक मेहरबान लिवा लाए। उन्होंने देखा, "जरा मुँह तो देखें।" मैंने कहा, "मुँह जीभ जो चाहे देखिए।" देखकर बड़े जोर से हँसे।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मैं घबराया, ऐसी हँसी केवल कवि-सम्मेलन में बेढंगी कविता के समय सुनाई देती है। मैं चकित भी हुआ। डाक्टर, बोले, "किसी डाक्टर को यह सूझी नहीं, तुम्हें 'पाइरिया' है। उसी का जहर पेट में जा रहा है और सब फसाद पैदा कर रहा है।" मैंने कहा, "तब क्या करूँ?" डाक्टर साहब ने कहा, "इसमें करना क्या है? किसी दंत चिकित्सक के यहाँ जाकर दाँत निकलवा दीजिए।" मैंने अपने मन में कहा, आपको यह तो कहने में कुछ कठिनाई ही नहीं हुई।

पाइरिया– দাঁতৰ এক বেমাৰ



गोया दाँत निकलवाने में कोई तकलीफ ही नहीं होती। खैर, रात भर मैंने सोचा? मैंने भी यही निश्चय किया कि यही डाक्टर ठीक कहते हैं। दंत चिकित्सक के यहाँ से पुछवाया। उसने कहलाया कि तीन रुपये फी दाँत तुड़वाने के लिए लगेंगे। कुल दाँतों के लिए छियानबे रुपये लगेंगे। मगर मैं आपके लिए छह रुपये छोड़ दूँगा। इसके अतिरिक्त दाँत बनवाई डेढ़ सौ अलग। यह सुनकर पेट का दर्द के साथ सिर में भी चक्कर आने लगा।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मगर मैं न सोचा कि जान सलामत है तो सब कुछ। इतना और खर्च करो। श्रीमती से मैंने रुपये माँगे। उन्होंने पूछा, "क्या होगा ?" मैंने सारा हाल कह दिया। वे बोलीं, "तुम्हारी बुद्धि कहीं घास चरने गई है? आज कोई कहता है दाँत उखड़वा डालो, कल कोई कहेगा, सारे बाल उखड़वा डालो, परसों कोई डाक्टर कहेगा, नाक नुचवा डालो, आँखें निकलवा दो। यह सब फिजूल है। खाना ठिकाने से खाओ। पंद्रह दिन में ठीक हो जाओगे।" मैंने कहा, "तुम्हें अपनी दवा करनी थी तो इतने रुपये क्यों बरबाद कराए ?"

मूल्यांकन



1 वैद्य जी ने लेखक को दर्द का क्या कारण बताया?

क चुड़ैल का प्रकोप

ख वायु का प्रकोप

ग पाइरिया

मूल्यांकन



2 अंत में लेखक किसकी सलाह से ठीक हुआ?

क डॉक्टर की

ख हकीम साहब की

ग पत्नी की

मूल्यांकन



3 लेखक ने किसकी पोशाक का व्यंग्य किया?

क वैद्यजी और हकीम साहब

ख पत्नी

ग डॉक्टर